Peer Reviewed Journal for M.Phil., Ph.D. & Appointment of Teacher in Universities & College

ISSN : 2454-4655 VOLUME - 8 No. : 3, April - 2022

International Journal of Social Science & Management Studies

Peer Reviewed & Refereed Journal

Indexing & Impact Factor 5.2

I.J.S.S.M.S

International Journal of Social Science & Management Studies

Contents

S. No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	बाल सामग्री का समसामयिक परिदृश्य एवं विविध रूपों का अध्ययन	डॉ. हेमकुमारी कुर्मी	1-7
2	ग्वालियर शहर में सामूहिक विवाह के सामाजिक और आर्थिक कारक	योगेन्द्र जैन डॉ. अलका चतुर्वेदी	8-12
3	बुन्देलखण्ड में शैव धर्म की उत्पत्ति एवं विकास	डॉ. प्रियंका पांडे	13-18
4	भारत में साम्प्रदायिक हिंसा : कारण एवं शांतिपूर्ण समाधान पीड़ित के सन्दर्भ में भारतीय विधि की विशेष भूमिका	राजेन्द्र कुमार चौधरी डॉ. राजीव जैन डॉ. विक्रम चौधरी	19-25
5	नारी सशक्तिकरण : चुनौतियाँ और सम्भावनाएँ	Rajesh Dehariya	26-29
6	"अनुसूचित जनजाति एवं सामान्य जाति की महिलाओं के सशक्तिकरण में स्व-सहायता समूह की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन" (म.प्र. के धार जिले के विशेष संदर्भ में)	ममता गोयल (गोनेकर) डॉ. जयश्री बोथरा	30-33
7	दलितों में राजनीतिक चेतना	सौरभ कुमार सोनी	34-38
8	अनुसूचित जातियों के विकास हेतु किए गए प्रयास	डॉ. संजय तिवारी श्यामू चौधरी	39-42
9	भारतीय जीवन शैली, सतत विकास और आत्मनिर्भर भारत : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. मीनाक्षी मेरानी	43-45
10	इतिहास लेखन के बदलते परिवेश में गाँधी का चम्पारण आन्दोलन : एक समीक्षा	जितेन्द्र कुमार	46-48
11	शिक्षण प्रभावशीलता के द्वारा छात्र केन्द्रित दृष्टिकोण और कक्षा प्रबन्धन	प्रेम चन्द माहौर डॉ. अन्जू लता	49-51
12	मिश्रित कृषि का कृषकों की आय पर प्रभाव : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (गोरखपुर जिले के संदर्भ में)	डॉ. लोकेश श्रीवास्तव राहुल कुशवाहा	52-61
13	रायसेन के किले का स्थापत्य	पूजा सक्सेना	62-67
14	"भारत के आर्थिक व्यापार का नया आयाम : ई-कामर्स" (वस्त्र व्यापार के विशेष सन्दर्भ में)	डॉ. राजेश कुमार यादव	68-71
15	जनसंचार के क्षेत्र में आधारभूत शोधकार्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. गोपा बागची योगेश वैष्णव	72-77
16	औद्योगिक विकास में मध्य प्रदेश वित्त निगम की समस्याएं और सुझाव	शालिनी सिंह परिहार	78-81
17	वर्तमान समय में योग की प्रासंगिकता	शशि सोनी डॉ. शैलजा दुबे	82-85
18	भारत में सतत् कृषि एवं ग्रामीण विकास : एक अध्ययन	डॉ. अमित कुमार साहू	86-90
19	मानवाधिकारों की अनुसूचित जाति एवं जनजाति आयोग की नीतियां	श्रीमती अंजना शुक्ला डॉ. अरूणा सेठी	91-92
20	जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद का वर्तमान स्वरूप व उसका समाधान का विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. सरोज अग्रवाल लोक पति यादव	93-98
21	प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक एवं तकनीकी पध्दतियों का संगणक के क्षेत्र में योगदान और सम्भावनाएं	डॉ. भरत बाथम	99-101
22	रामायणकाल में वैवाहिक प्रक्रियायें	Dr. Pankaj Kumar Singh	102-104
23	मानवता के सच्चे संरक्षक : गुरु नानक देव	डॉ. मलकीयत सिंह	105-108

International Journal of Social Science & Management Studies (I.J.S.S.M.S.)
Peer Reviewed-Referred Research Journal, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex - UGC S.N. 5351
ISSN : 2454 - 4655, Vol. - 8, No. - 3, April - 2022, Special Issues

मानवता के सच्चे संरक्षक : गुरु नानक देव

डॉ. मलकीयत सिंह
सह-प्रोफेसर, हिंदी विभाग, राजकीय महाविद्यालय धर्मशाला

**"सतगुरु नानक परगटेया, मिटी धुंध, जग चानण होया।
ज्यों कर सूरज निकलेया, तारे छिपे अंधेर पलोया।।**

भाई गुरुदास द्वारा उच्चारित यह शब्द धरती के उस महान आत्मा के अवतरण की ऐतिहासिक घटना को बयान करते है, जब मानवता की रक्षा हेतु ईश्वर ने गुरु नानक देव जी के रूप में स्वयं प्रकाशित होकर जगत में फैले मिथ्या आडंबरों और मानवता पर मंडरा रहे कोहरे को समाप्त किया।

सिख धर्म के प्रथम गुरु एवं संस्थापक गुरु नानक देव जी का जन्म मानव जाति की रक्षा एवं उसे संगठित करके, उसके भीतर अलौकिक मानवतावादी भाव जगाने वाला सिद्ध हुआ। इस कथन की पुष्टि हेतु हजारो तथ्यों के साथ-साथ सिख गुरु परंपरा, उनके बलिदान सिख धर्म की प्रतिबद्धता सेवाभाव आदि अनंत तथ्य उपलब्ध हैं। ऐसे में गुरु जी के जीवन पर लिखना सूर्य के सामने जुगनू के प्रकाश के समान है।

प्राकृतिक न्याय एवं ईश्वरीय संकल्पना की दृष्टि से लघु विहगम दृष्टि डाली जाए तो करोड़ों आकाशगंगाओं में स्थित अन्य मंडलों के बीच हमारे ग्रह पृथ्वी पर मानव जीवन की उत्पत्ति सहज विकास की प्रतिक्रिया का हिस्सा नहीं लगती। अपितु विशाल सत्ता की संकल्पना प्रतीत होती है।

धरती पर मनुष्य के आने से पहले अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण की प्रक्रिया में खूंखार प्राणियों का एक झटके में समाप्त हो जाना अनायास नहीं हो सकता। धरती पर मानव जीवन के विकास क्रम में मानव इसलिए भी भिन्न है क्योंकि उसके पास बुद्धि कल्पना एवं भाषा का गुण अन्य प्राणियों से अधिक मात्रा में उपलब्ध है। इसी कारण वह जन्मजात ही विस्तारवादी बना रहा और जब जब उसकी अतिक्रमण कारी नीति मानव जाति के लिए खतरा बन गई तब तक किसी न किसी रूप में ईश्वर ने जन्म लेकर मानव को आगाह किया। ईश्वर के अवतरण की सभी प्रचलित अवतार एवं उनकी कथाओं को विश्व की सभी मानव जातियां कमोबेश रूप में स्वीकार करती है।

15 अप्रैल 1469 वैशाख सुदी राय भोए की तलवंडी श्री ननकाना साहब (वर्तमान पाकिस्तान) में श्री कालू जी मेहता एवं श्रीमती तृप्ता देवी जी के घर भी ईश्वरीय अवतार नानक ने जन्म लिया।

गुरु नानक जी के जन्म काल की परिस्थितियों को ध्यान में देखें तो मानव मानव का ही निशाना करने में तुला था ऐसे में गुरु नानक ने अपने मन वाणी कर्म से मानवता की रक्षा का उदाहरण प्रस्तुत किया तथा मानव के भीतर दया, धर्म, कर्म, भक्ति भाव जागृत करवाकर भयानक मारकाट के युग में मनुष्य में परपीड़ा परसेवा एवं परम सत्ता के प्रति प्रेम उत्पन्न किया।

राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियां :- गुरु नानक देव जी का जन्म ऐसे समय हुआ जब अरब से उठी इस्लाम की आंधी ने उत्तर भारत को अपने घने धुंध के ने घेर रखा था भारत के निवासी इस्लाम के संक्रमण से ग्रस्त हो रहे थे यद्यपि भारतवर्ष पर विदेशी जातियों के हमलों का अति प्राचीन इतिहास रहा है लेकिन यह हमला कुछ अलग था जिसके बीज गुरु नानक के जन्म से भी 9 शताब्दी पहले पड़ चुके थे।

इस्लाम धर्म के संस्थापक हजरत मोहम्मद के देहावसान के बाद ज्यादातर अरब का क्षेत्रफल मतान्तरित हो चुका था इसके उपरांत मध्य पूर्व एशिया में भी कई समुदाय इस्लाम में चले गए हजरत मोहम्मद की मृत्यु के पश्चात उनके उनके साथी रहे चार खलीफाओं ने अपने-अपने ढंग से व्याख्यायित किया और उसे धर्म के जबरन प्रसार का रूप दे दिया जिसका प्रभाव सबसे पहले बौद्ध धर्म पर पड़ा। इसने ईरान एवं अफगानिस्तान के साथ सिंध तक को भी अपने कब्जे में ले लिया।

अरबों के हमलों की सूची अत्यंत लंबी है जिसके अंतर्गत उन्होंने मध्य एशिया की लगभग सभी जातियों को इस्लाम में मत मतांतरित कर लिया था जबरन धर्म परिवर्तन के इस दौर में तुर्की जातियां भी परिवर्तित हुई जो कालांतर में इस्लाम के प्रचार में अरबों से अधिक हमलावर एवं क्रूर साबित हुई। हिंदुस्तान पर मुस्लिम हमले नहीं मतान्तरित तुर्कों ने किए इसमें अकेले महमूद गजनवी ने भारत पर 17 बार आक्रमण किया एवं कत्लेआम कर धनसंपदा को लूटा। इन हमलावरों का हिंदू राजाओं ने यथाशक्ति प्रतिकार किया लेकिन असंगठित होने के कारण इन्हें रोक न सके। प्रारंभ में लूटपाट की तरह प्रतीत होने वाले इन हमलों की वास्तविकता धर्म प्रचार के रूप में शीघ्र ही

Off. 320, Sanjeevni Nagar, Garha, Jabalpur (M.P.) srfjournal22@gmail.com, www.srfresearchjournal.com, M. 9131112045, 9770123251